रमेश प्रसून

ई-मेल:r.c.goel.bsr@gmail.com

मैं माँ हूँ

बड़े वाले दो बेटों की तरह, यह सबसे छोटा बेटा संदीप भी प्रशासनिक अधिकारी बन गया। माँ को बड़ा गुमान था। लाड़ तो उनका सब पर बराबर था; लेकिन वे छोटे पर अपना अधिकार कुछ ज्यादा ही समझती थीं। अभी दो साल ही हुए हैं उसकी शादी को। उसकी पत्नी बड़े अफसर की बेटी है। बेटा हुआ है। पहला बच्चा है। उसे लेकर पत्नी सहित माँ के पास आया है वह। इससे माँ बहुत खुश है।

पति की मृत्यु के बाद, उम्मीद थी कि कोई न कोई बेटा उन्हें अपने साथ अवश्य ले जाएगा; लेकिन बेटे-बहुओं ने इस घर को छोड़कर अन्य जमीन-जायदाद, रुपये-पैसे, गहनों के साथ माँ भी बाँट ली। चार महीने इसके पास, चार महीने उसके पास और चार महीने तीसरे के पास।

माँ की ममता आहत थी। वे इसी छोटे बेटे के पास रहना चाहती थीं; लेकिन इसकी पत्नी उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं करती। वह उन्हें अनपढ़, गँवार, बदशक्ल, बेसहूर कहती है। उसे उनमें से बदबू लगती है। ऐसी बातों पर वह अपने पति से खुसुर-पुसुर अनेक बार कर चुकी है, जिसे वे कई बार चुपचाप सुन चुकी हैं । उससे बड़ा संताप तो उन्हें तब होता है, जब बेटा चुप लगाये रहता है। माँ के पक्ष में एक शब्द भी नहीं कहता। यही बेटा जब उनके सामने अपनी सासू माँ की शान में कसीदे पढ़ने लगता है तो वे उसका मुँह और अपने प्रति उसका बदला हुआ व्यवहार देखती रह जाती हैं।

अपने दिल के अरमानों को पूरा करने के लिए, वे चाहती थीं कि इस बहू की पहली डिलीवरी उनकी देखरेख में हो। वे सोचती ही रह गईं जबकि उनकी बहू ने पहली डिलीवरी अपनी माँ की देखरेख में अपने मायके में करवाने की जिद की जिसे उनकी अनुमति के बिना उनके बेटे ने अपने खर्चे पर करवाकर पूरी की थी। उस समय वे ज़हर का-सा घूँट पीकर रह गईं थीं।

आज अप्रत्याशित रूप से जब उनके बेटे-बहू ने उनसे अपने साथ चल कर अपने पास रहने का आग्रह किया तो वे फूली नहीं समाईं। पहली सभी बातों और कटुता को भूलकर, खुशी-खुशी उनके साथ जाने की तैयारी करने लगीं। लेकिन दीवारों के सहारे बहू-बेटे के मध्य की यह गुप्त बात उडती-फिरती जब उनके कानों में पड़ी तो वे सदमे में आकर धम्म से बैठ गईं। बहू का बेटे से कहना था कि—"देखो, मुझे भी सर्विस में ड्यूटी पर तो जाना ही पड़ेगा, बच्चे को चिल्ड्रेन केयर सेंटर में छोड़ना खर्चीला तो है ही, रिस्की भी है। आयाओं के तरह-तरह के किस्से रोज़ सुनने को मिलते हैं। आया की जगह दिन में ये बच्चे को रख लिया करेंगी। एनेक्सी साफ करवा देंगे, रात को वहीं सो जाया करेंगी।"

ममता के अन्ध से निकालकर आत्म-अभिमान और अस्मिता के वर्चस्व ने जोर मारा, मोहपाश तोड़कर बेटे-बहू के छद्म इरादे को झटका देते हुए दृढ़ता पूर्वक कह उठीं, "मैं नहीं जा पाऊँगी तुम्हारे साथ संदीप। तुम्हारी माँ अनपढ़ है, गँवार है, बदशक्ल है, बेशऊर है, उसमें से बदबू आती है, तुम्हारे बच्चे को उसकी गंध लग जाएगी। अकेले रहकर, अकेले ही मरना पसंद करूँगी, समझे!...मैं माँ हूँ, केवल जरूरत की चीज नहीं।"

रमेश प्रसून

निर्णय

व्यग्रता में लिखा पत्र मेज पर छोड़कर वह चुपचाप घर से निकल गया। लिखा था—

आदरणीया भाभीजी

सादर प्रणाम

माता-पिता की आज्ञा के अनुसार, आप लोगों के साथ इस बड़े नगर में मेरे रहने, पढ़ने और जॉब ढूँढने तक की जो व्यवस्था निश्चित हुई है,उसे तोड़कर मैं अब दूर जा रहा हूँ।

उसका कारण आप और आपकी घुट-घुट कर जीने की प्रवृत्ति, अव्यक्त छटपटाहट और मौन मनो-व्यथा है, जिसे मैंने बहुत गहराई से महसूस किया है। इसीलिए मैं कुछ बातें अवश्य कह देना चाहता हूँ—

"आप सुन्दर हैं, सुशील हैं, शिक्षित हैं, फिर भी इन विद्रूप स्थितियों के विरुद्ध विद्रोह करने की जगह, दोनों कुलों की लाज बचाए रखने के लिए चुपचाप अपने ऊपर अत्याचार किये जा रही हैं। दो साल हो गये आपको इस हालत में देखते-देखते।

आपके परिवार वालों ने आपका विवाह मेरे इन बड़े भाई साहब के साथ करने का निश्चय, इनके सुन्दर, सुडौल, आकर्षक व्यक्तित्व और अच्छे-खासे जॉब से प्रभावित होकर किया था।

लेकिन मेरे पैरों के नीचे की जमीन उस समय खिसक गई थी, जब हमारे परिवार के हितैषी एवं भाई साहब के घनिष्ठ मित्र ने एक दिन मुझे किसी चर्चा के बीच में से उठाकर एकान्त में लेजाकर बतलाया कि भाई साहब सेक्स के मामले में असमर्थ हैं। तब मेरी समझ में आया कि विवाह के नाम से वे दूर क्यों भागते थे। इस विवाह के लिए तैयार भी वे इसलिए हुए थे कि उन्हें जड़ी-बूटी बेचने वाले वाले एक नीम हकीम ने उनमें पुंसत्व पैदा करने का आश्वासन देकर तथा कुछ विधियाँ बताकर पूरी तरह आश्वस्त कर दिया था। लेकिन बहुत प्रयास के बाद भी वे प्रायः असफल ही रहे हैं। इसीलिए विभागीय टूर का बहाना बनाकर घर से बाहर अपना अधिकतर समय बिताने के आदी हो गये हैं। उनकी अनुपस्थिति में आपकी ऑखों में मौन स्वीकृति का अनुमान लगाकर, युवा होता हुआ मै प्रायः विचलित हो जाया करता था। अच्छा हुआ बार-बार अनर्थ होने से बच गया। लेकिन उस समय मेरे हतप्रभ रह जाने की सीमा नहीं रही जब लम्बे टूर पर जाते समय एक दिन उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रखकर बातों-बातों में अपनी असमर्थता का वास्ता देकर मुझे आपका उपभोग करने का स्पष्ट इशारा दे दिया था। उन्हें बराबर डर था कि इन स्थितियों में कहीं कोई बाहर वाला लाभ न उठा ले।

उस समय यह सोचकर मेरा सिर झनझना उठा कि औरत की भावनाओं का वज़ूद कुछ न हुआ, वह तो केवल पुरुषों के उपभोग और उपयोग की वस्तु मात्र है। मैं एक बार को आपके उपभोग की बात सोच भी लेता किन्तु मैं उनके इस व्यवहार से उनके प्रति घृणा और आत्मग्लानि से भीतर-भीतर बुरी तरह गला जा रहा हूँ। आपकी निरीह विवशता कौंध-कौध कर मुझे विचलित किये जा रही है। मेरे अन्दर आपके सम्मुख पड़ने की हिम्मत भी जवाब दे चुकी है।

भाभी जी, अपने असमंजस की परिधि को तोड़कर मेरी बात मान लो, मैं गिड़गिड़ाकर आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि किसी सम्भावित अनिष्ट के होने से पहले या इधर-उधर भटकने की स्थिति उत्पन्न होने से पहले अपने भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए इन लुण्ठित-कुण्ठित मान्यताओं को छोड़कर अपने मायके चली जाइए। कोर्ट के माध्यम से तलाक ले लीजिए और नई ज़िन्दगी शुरू कीजिए।"

यह पत्र पढ़कर उसकी ऑखें खुल गईं। उसके सारे अनिश्चय, सारे अनिर्णय, सारे असमंजस समाप्त होकर दृढ़ता के साथ सुनिश्चित निर्णय में तब्दील हो गये।

अन्ततः उसने वैसा ही किया जैसा निर्णय लेने के लिए उसके देवर ने अपने पत्र में लिखा था।